Regional Institute of Education
Bhopal

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना :–

1 1 भूमिका :–

प्राथमिक शिक्षा मानव जीवन के लिए सर्वाधिक महत्पूर्ण एव प्रारभिक चरण है इसी तथ्य को ध्यान मे रखते हुए हमारे देश मे प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण हेतु प्रयास किये जा रहे है ।

सवैधानिक प्रावधानो के अनुसार हमारे देश के प्रत्येक बालक/बालिका को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए, शिक्षा के सार्वभौमीकरण की अवधारणा काफी हद तक सफल हुई है किन्तु अब आधुनिक समय मे प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है ।

अनौपचारिक केन्द्र द्वारा 9 – 14 वर्ष के आयु वर्ग के विद्यालय के बाहर के बच्चो को प्राथमिक स्तर की शिक्षा सुलभ बनाने में निश्चित रूप से सहायता मिली है ।

किन्तु फिर भी औपचारिक केन्द्रो (विशेषकर प्राथमिक शालाओ) की गुणवत्ता, सबधी अधिगम प्रक्रिया मे काफी अतर पाया जाता है । गुणवत्ता सबधी इन असगत स्थिति के सुधार की अविलम्ब आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 मे इन दो बातो पर तुरंत ध्यान देने का आह्वान किया गया है –

1) विद्यालय के अनाकर्षक परिवेश, भवनो की असतोष दशा व शिक्षण सामग्री के अभाव की दृष्टि मे सुधार ।

2) उस न्यूनतम अधिगम क्षमताओं का निर्धारण, जिनकी विभिन्न शिक्षा स्तरो को पूरा करने वाले सभी छात्रो को सप्राप्ति होनी चाहिए ।

आठवी पचवर्षीय योजना तैयार करने के लिए गणित प्रारभिक बाल्यावस्था व प्राथमिक शिक्षा के कार्यदल की रिपोर्ट में इस नीति निर्देश को दृष्टिगत करते हुए

कहा गया है कि – "लक्ष्यो का निर्धारण केवल सहभागिता की दृष्टि से नहीं वरन् गुणवत्ता और प्रतिफलो की दृष्टि से किये जाने की आवश्यकता है ।

वस्तुत 1978 मे एन सी.ई.आर टी द्वारा न्यूनतम अधिगम क्षमताओ के विशिष्टीकरण की दिशा मे पहले ही महत्वपूर्ण प्रयास किये जा चुके थे, जो कि सहायता प्राप्त परियोजनाओ, "प्राथमिक शिक्षा, पाठ्यचर्या नवीनीकरण" सामुदायिक शिक्षा एवं सहभागिता मे विकासात्मक कार्यकलाप से जुड़े थे । इन परियोजनाओ के अंतर्गत कक्षा 2, 3, 4, 5 के सभी बच्चो द्वारा अपेक्षित सप्राप्ति हेतु अधिगम प्रतिफलो का सूचक "न्यूनतम अधिगम केटीनुअम" तैयार किया गया था । 1984 में "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीनीकरण" परियोजना का मूल्याकन न्यूनतम अधिगम मे विनिर्देशित दक्षताओ के आधार पर सभी प्राथमिक कक्षाओ के लिए तैयार किये गये सप्राप्ति परिसूत्रो की सहायता से किया गया था । इस मूल्याकन अध्ययन से प्राप्त अनुभावित प्रमाणो का लाभ उठाते हुए व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का अनुसरण करते हुए एन.सी ई आर टी ने प्राथमिक स्तर पर "न्यूनतम अधिगम स्तर" शीर्षक से एक अन्य दस्तावेज तैयार किया ।

न्यूनतम अधिगम स्तर से तात्पर्य :–

आम तौर पर यह देखा जा रहा है कि प्राथमिक शिक्षा का स्तर निरतर गिर रहा है । शिक्षार्थी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर लेने पर भी ज्ञान, समझ, व्यक्तित्व, के गुणो के उस स्तर पर नही पहुच पाते जिसकी उनसे अपेक्षा की जाती है । इस समस्या को शिक्षा मे - गुणवत्ता की कमी के नाम से जाना जाता है । इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रो मे शिक्षा का स्तर कही ऊँचा और कहीं नीचा है । इस समस्या को शिक्षा मे समता की कमी के नाम से जाना जाता है । शिक्षा में गुणात्मक व समता की समस्याओ को देखते हुए यह उचित समझा गया कि अधिगम के न्यूनतम स्तर निर्धारित किये जायें और यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी विद्यार्थी उन्हें पूर्ण प्राप्त कर सके । यही न्यूनतम अधिगम स्तर निर्धारण की धारणा है ।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

न्यूनतम अधिगम स्तर निर्धारण से लाभ :–

न्यूनतम अधिगम स्तर के निर्धारण से कई बुनियादी बातोमे सहायता मिलती है शिक्षण अधिगम के लक्ष्यो के रूप मे निश्चित और स्पष्ट होना दक्षताओं के रूप मे बड़े स्पष्ट लक्ष्य शिक्षक के सम्मुख होगे, इनमें शिक्षको को कार्य की नई दिशा मिलेगी और उनके सारे प्रयास निर्धारित दक्षताओं की सप्राप्ति पर ही केन्द्रित होंगे । शिक्षक विशिष्ट दक्षता के अनुरूप अपनी विषय वस्तु व शिक्षण विधि निश्चित कर लेते है तद्नुसार आवश्यक सहायक सामग्री जुटाकर व्यूह रचना कर सकते है । अधिगम स्तर निर्धारित से छात्रो की जांच तथा वस्तुपरक मूल्यांकन मे भी शिक्षको को सहायता मिलती है ।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

गणित विषय हेतु न्यनतम दक्षताएं :–

प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम मे गणित विषय का महत्वपूर्ण स्थान है । कक्षा पाचवी तक गणित विषय अध्यापन ऐसा होना चाहिए, जो बच्चों मे अपने भौतिक तात्कालिक पर्यावरण से प्राप्त अनुभवों के आधारभूत गणितीय प्रत्ययों की समझ के विकास मे सहायक हो सके ।

गणितीय अधिगम के माध्यम से शीघ्रता एव शुद्धता के गणन करने की योग्यता तार्किक ढग से सोचने की योग्यता, प्रतिशत, दशमलव प्रयोग करने की क्षमता का विकास किया जाना है जिससे छात्रो में आत्मविश्वास उत्पन्न हो और वे दैनिक जीवन मे इसका उपयोग करने में सक्षम हो सके ।

प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति तक अर्थात् कक्षा पाचवी में छात्रों से निम्नलिखित प्रमुख दक्षतायें अपेक्षित हैं –

1) 10,000 से 1,00,00,000 तक के सख्याक को पहचानने की योग्यता ।
2) 10,000 से 9,99,999 तक की सख्याओं का स्थानीय मान समझना ।
3) 100 से कम दो सख्याओ का लघुत्तम समापवर्त्य निकालना ।
4) पांच व छ· अको की सख्याओ का योग और व्यकलन कर सकना ।

5) दैनिक जीवन की मीटर – सेन्टीमीटर सबधी समस्याओ को हम कर सकना ।

6) समयावधि की गणना करना ।

7) रूपये – पैसे सबधी रूपान्तर का ज्ञान ।

8) स्केल की सहायता से रेखा, त्रिभुज आदि की रचना ज्ञान ।

1 2 **प्रस्तुत अध्ययन .–**

वर्तमान समय मे क्षेत्रीयवार छात्रो की उपलब्धि मे भिन्नता दिखाई पडती है । राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण एव प्रशिक्षण परिषद द्वारा किये गये 1986 के अखिल भारतीय सर्वेक्षण के अनुसार वस्तुत लगभग 95 % जनसख्या की शिक्षा सेवार्थ प्रत्येक 1 कि मी की दूरी पर प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध है तथापि इसव्यापक प्रसार के फलस्वरूप अध्ययन अध्यापन प्रक्रियाओ व विद्यालयो से उत्तीर्ष होकर निकले छात्रो की योग्यता की दृष्टि मे, गुणवता की दृष्टि म व्यापक रूप से भिन्न है । गुणवत्ता की यह भिन्नता राज्यो ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालयो, सरकारी व गैर सरकारी सस्थाओ द्वारा सचालित विद्यालयो मे स्पष्ट रूप से दिखाई देती है ।

गुणवत्ता सबधी इस असगत स्थिति में सुधार हेतु 1986 की राष्ट्रीय नीति मे विद्यालय परविश, अध्यापन प्रक्रिया सबंधित अन्य सुझावों के अतिरिक्त "न्यूनतम अधिगम क्षमता" का सुझाव दिया । किन्तु फिर भी पाठ्यक्रम के एकरूपता होते हुए भी छात्रो की उपलब्धि मे भिन्नता देखी जा सकती है । उपरोक्त समस्या का कारण जानने के लिए अनुसधानकर्ता के कक्षा पाचवी का गणित विषय लेकर निम्नलिखित विषय शोध हेतु चुना ।

1 3 **समस्या कथन .–**

"कक्षा पाचवी के विद्यार्थियो का गणित विषय मे उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन"

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

कक्षा पाचवी प्राथमिक स्तर का अतिम चरण है, छात्रो द्वारा गणित विषय की न्यूनतम दक्षताओ की सप्राप्ति ही गणित की उपलब्धि है । विद्यालय परिवेश, शिक्षक व्यवहार, शिक्षण विधि छात्र – शिक्षक अत.क्रिया सम्मलित रूप से छात्र अधिगम को प्रभावित करते है, और यह पूरी प्रक्रिया शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया कहलाती है ।

प्रस्तुत शोध मे प्राथमिक विद्यालयो में कक्षा पाचवी के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि एव उसके कारक के रूप मे विद्यालय मे होने वाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है ।

1.4 परिकल्पना :–

प्रस्तुत अध्ययन वर्णात्मक है, जिसमें पूर्व परिकल्पना नही बनाई गयी है, जिस प्रकार परिणाम प्राप्त हुए उसी प्रकार वर्णित किया गया है ।

1.5 शोध कार्य के उद्देश्य :–

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्न उद्देश्य है .–

1) कक्षा पांचवी के छात्रो की उपलब्धि ज्ञात करने हेतु "गणित उपलब्धि परीक्षण" निर्मित करना ।

2) उपरोक्त गणित उपलब्धि परीक्षण द्वारा छात्रो की कक्षा पाच में उपलब्धि ज्ञात करना ।

3) कक्षा पाचवी के छात्रो हेतु "विद्यार्थी साक्षात्कार परिसूची" का निमार्ण कर, इसके प्रयोग द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन करना ।

4) प्राथमिक शिक्षको/शिक्षिकाओ से जानकारी प्राप्त करते हुए प्राथमिक शिक्षक/शिक्षिका साक्षात्कार परिसूची का निर्माण कर, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन ।

5) विद्यालय अवलोकन प्रपत्र का निर्माण करके विद्यालय वातावरण एव विद्यालय की अन्य सहगामी क्रियाओ का अध्ययन करना ।

6) उपरोक्त समस्या सबधी सुझाव देना ।

1 6 **शोध्य चर :–**

प्रस्तुत अध्ययन मे निम्नलिखित शोधचर है ।

स्वतत्र चर – शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विद्यालय परिवेश एव विद्यालयीन गतिविधियाँ ।

आश्रित चर – छात्रो की गणित विषय दक्षता उपलब्धि ।

1.7 **शोधकार्य की सीमाऐं :–**

* शोध्य कार्य मे सीहोर तथा भोपाल जिले के प्राथमिक विद्यालयो को सम्मिलित किया गया है ।
* कक्षा पाचवी के कुल विद्यार्थियो को सम्मिलित किया गया है ।